संस्कृत साहित्य सौरभ

तीन नाटक

000688

70

Gandhi Smarak N
Karnatak Shakha
130, NEHRU CIRC
BANGALORE-

O15,2xBHA
152W3N58;1
H.000688

संस्कृत-साहित्य-सौरभ 000688

३३

VA PRACHAR CENTRE
BANGALORE

भास-कृत

तीन नाटक

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
DATE.......................
Acc No. 8964
CALL No.......................
BANGALORE-1

श्री सुशील
द्वारा
कथासार

विष्णु प्रभाकर
द्वारा
संपादित

१९५८

सत्साहित्य प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय,
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
DATE.....................
ACC No..............................
CALL No.....................
BANGALORE-1.

H·000688

O15,22BHA 152w3N58;1

पहली बार : १९५८
मूल्य
सैंतीस नये पैसे

मुद्रक
हिंदी प्रिंटिंग प्रेस,
दिल्ली

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
DATE.....................
ACC. NO...........................
CALL NO.....................
BANGALORE-1
660688

संस्कृत-साहित्य-सौरभ

हमारा संस्कृत-साहित्य अत्यंत समृद्ध है। भारतीय जीवन का शायद ही कोई ऐसा अंग हो, जिसके संबंध में मूल्यवान सामग्री का अनंत भंडार संस्कृत-साहित्य में उपलब्ध न हो। लेकिन खेद की बात है कि संस्कृत से अपरिचित होने के कारण हिंदी के अधिकांश पाठक उससे अनभिज्ञ हैं। उनमें जिज्ञासा है कि वे उस साहित्य से परिचय प्राप्त करें; परंतु उसका रस वे हिंदी के द्वारा लेना चाहते हैं।

पाठकों की इसी जिज्ञासा को देखकर बहुत समय पहले हमने विचार किया था कि संस्कृत के महाकवियों, नाटककारों आदि की विशिष्ट रचनाओं को छोटी-छोटी कथाओं के रूप में हम हिंदी में प्रस्तुत करें। फलतः अबतक कई पुस्तकें निकाल दी गई हैं।

इस पुस्तक-माला से हिंदी के सामान्य पाठक भी लाभ उठा सकें, इसलिए पुस्तकों की भाषा बहुत सरल बनाने का प्रयत्न किया गया है। पाठकों की सुविधा के लिए टाइप भी मोटा लगाया गया है।

इन पुस्तकों का संपादन हिंदी के सुलेखक श्री विष्णु प्रभाकर ने बड़े परिश्रम से किया है।

आशा है, हिंदी के पाठकों को इन पुस्तकों से संस्कृत-साहित्य की महान् रचनाओं की कुछ-न-कुछ झांकी अवश्य मिल जायगी। पूरा रसास्वादन तो मूल ग्रंथ पढ़कर ही हो सकेगा। यदि इन पुस्तकों के अध्ययन से मूल पुस्तकें पढ़ने की प्रेरणा हुई तो हम अपने परिश्रम को सफल समझेंगे।

—मंत्री

भूमिका

महाकवि भास बड़े प्रसिद्ध कवि हुए हैं। कालिदास, वाणभट्ट ग्रौर राजशेखर ग्रादि स्वनामधन्य कवियों ने उनकी बड़ी प्रशंसा की है। ग्रभिनव गुप्त, वामन ग्रौर भामह ग्रादि ग्राचार्यों ने भी उनके रूपकों का उल्लेख किया है, लेकिन खेद है कि इतनी प्रसिद्धि होने पर भी इनके बारे में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता है कि यह कब ग्रौर कहां हुए। ग्रधिकांश विद्वान् मानते हैं कि यह तीसरी सदी में हुए थे। इनके लिखे तेरह रूपकों का पता चला है। पर बहुत-से विद्वानों को इस बारे में शक है कि वे सब भास के लिखे हुए हैं।

इस संग्रह में भास के तीन छोटे नाटक लिये गये हैं। इन्हें एकांकी भी कहा जा सकता है। तीनों नाटकों की कथा महाभारत से ली गई है। पहले नाटक में भीम ग्रौर उसके पुत्र घटोत्कच के मिलन तथा हिडिंबा के प्रेम का चित्रण हुग्रा है। दूसरे में श्रीकृष्ण के प्रसिद्ध 'दूत-कार्य' ग्रौर दुर्योधन की दुष्टता का परिचय दिया गया है। तीसरा 'उरु-भंग' संस्कृत का शायद पहला दुःखांत नाटक है। युद्ध के ग्रंत में भीम ने प्रतिज्ञा के ग्रनुसार दुर्योधन की जंघाएं तोड़ी थीं; उसीका वर्णन इसमें है। 'दूत-वाक्य' का दुष्ट दुर्योधन इसमें परम शांत ग्रौर वीर दिखाया गया है।

नाटकीय तंत्र की दृष्टि से ये तीनों सफल नाटक हैं। भास छोटे-छोटे वाक्य लिखने के लिए प्रसिद्ध हैं, परंतु भाव इनमें भरे रहते हैं। इनकी भाषा बोल-चाल की, सरल, स्वाभाविक ग्रौर भावपूर्ण है। यह मानव-हृदय के सच्चे पारखी हैं। इनका चरित्र-चित्रण एक मनोवैज्ञानिक चरित्र-चित्रण है। प्रकृति-चित्रण में भी यह किसीसे पीछे नहीं हैं। जयदेव ने इन्हें कविता-कामिनी का हास माना है। संवाद भी इनके ग्रपूर्व होते हैं।

––संपादक

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
DATE....................
ACC. NO....................
CALL NO....................
BANGALORE

तीन नाटक

: १ :

मध्यम व्यायोग

एक समय ब्राह्मण केशवदास अपनी पत्नी और तीन पुत्रों के साथ अपने मामा के गांव जा रहे थे। वहां उनके मामा के बेटे का जनेऊ होनेवाला था। वे कुरु-जंगल के यूप गांव के रहनेवाले थे। इस देश के राजा युधिष्ठिर थे। सहसा उन्होंने देखा कि एक वीर पुरुष उनके पीछे-पीछे आ रहा है। उस पुरुष के बाल किरणों के समान फैले हुए थे, उसकी आंखें लाल और बड़ी-बड़ी थीं। उसने गले में सोने की कण्ठी पहनी थी और काले मेघ में जैसे बिजली चमकती है उसी प्रकार वह अपने शरीर पर जनेऊ धारण किये हुए था। वह देखने में रुद्र के समान मालूम होता था।

उसे देखकर ब्राह्मण के तीनों बेटों ने अपने पिता से कहा, "हे पिता, रेशमी कपड़े पहने हुए, जिसकी दो दाढ़ें बाहर निकली हुई हैं, जिसकी नाक हल जैसी है, जो अग्नि के समान तेजवाला है, यह कौन है? पर्वतों में वज्रपात के समान, पक्षियों में बाज के समान,

पशुओं में सिंह के समान, मनुष्य का रूप धारण किये हुए मौत जैसा यह कौन है ?"

तभी उस पुरुष ने कहा, "ब्राह्मणों ठहरो ! तुम घबराकर क्यों भागे जाते हो ? रुको। मैं जानता हूं कि ब्राह्मण का आदर करना चाहिए, लेकिन फिर भी माता की आज्ञा है, चाहे जैसे भी हो मुझे यह बुरा काम करना ही होगा।"

ब्राह्मण समझ गया कि यह राक्षस आज हमको खा डालेगा। फिर भी उसने अपनी स्त्री को धीरज बंधाया। कहा, "डरो नहीं। पांडवों का स्थान बहुत दूर नहीं है। वे शरण में आनेवालों की रक्षा करनेवाले हैं, साहसी हैं। वे इस राक्षस को दण्ड देंगे।"

तब उसके बड़े बेटे ने कहा, "मैंने सुना है कि पांडव लोग तो धौम्य ऋषि का यज्ञ देखने गये हैं। सब नहीं गये हैं। भीमसेन आश्रम की रक्षा करने के लिए रुक गये हैं। लेकिन इस समय वह आश्रम में नहीं हैं। व्यायाम करने बाहर गये हुए हैं।"

इसपर पिता ने कहा, "तब तो हम मारे गये। लेकिन आओ इसीसे प्रार्थना करें। शायद कुछ हो सके।"

वह राक्षस और कोई नहीं घटोत्कच था। उसने

एक शर्त पर उनको छोड़ देने की बात मान ली। वह शर्त यह थी कि ब्राह्मण अपना एक लड़का उसे दे दे। उसने कहा, "महाराज, मैं विवश हूं। अगर आप एक बेटा नहीं देंगे तो जरा-सी देर में आपका कुटुंब समाप्त हो जायगा।"

बड़ी जटिल समस्या थी। ब्राह्मणी ब्राह्मण को नहीं जाने देती थी। घटोत्कच को स्त्री की आवश्यकता नहीं थी। ब्राह्मण उसकी दृष्टि में बूढ़ा हो गया था। पुत्रों में भी ब्राह्मण बड़े लड़के को बहुत प्यार करता था। वह उसे नहीं छोड़ना चाहता था। ब्राह्मणी छोटे को बहुत प्यार करती थी। अब बचा तो बेचारा मझला लड़का बचा। वह तुरंत घटोत्कच के साथ जाने के लिए तैयार हो गया। उसने सबको प्रणाम किया, सबसे विदा ली और अंत में घटोत्कच से कहा, "पास ही तालाब मालूम होता है। परलोक जाने से पहले, तुम्हारी आज्ञा हो तो, मैं अपनी प्यास शांत कर लूं।'

घटोत्कच उस बालक के साहस से प्रभावित हुआ। उसने कहा, "जाओ, जल्दी पानी पी आओ।"

ब्राह्मण रोने लगा। ब्राह्मणी भी बहुत दुखी हुई। वह भी रोने लगी। आखिर बेटा ही तो था। दोनों भाई भी बहुत पछता रहे थे। उधर घटोत्कच को बड़ी

जल्दी थी। जब मझले लड़के के आने में कुछ देर हुई तो उसने उनका नाम पूछा।

बड़े भाई ने कहा, "उसका नाम ! बेचारा मझला।"

घटोत्कच पुकारने लगा, "अरे मझले, जल्दी आ।"

वह आवाज बहुत तेज थी। सारे वन में फैल गई। पांडवों के आश्रम में भीम लौट आया था। उसने भी आवाज को सुना। वह भी तो मझला ही था। सोचने लगा—यह मुझे कौन पुकारता है।

जब घटोत्कच ने कई बार पुकारा तो वह वहां आ पहुंचा और घटोत्कच के रूप को देखकर बहुत प्रभावित हुआ। सोचने लगा—ऐसा लगता है, जैसे यह राक्षसी से पैदा हुआ किसी वीर का पुत्र हो।

उसने घटोत्कच से कहा, "अरे मैं आ गया।"

घटोत्कच ने उसे देखा। देखता ही रह गया—सिंह के समान आकार। सोने के ताल वृक्ष के समान भुजा। गरुड़ के पांव जैसी चिकनी पीठ। कमल के पत्ते जैसे नेत्र मानो स्वयं विष्णु आये हों। बोला, "मैं तुम्हें नहीं बुला रहा। मझले को बुला रहा हूं।"

भीमसेन ने कहा, "इसीलिए तो मैं आया हूं।"

घटोत्कच ने पूछा, 'क्या आप भी मझले हैं?'

तभी ब्राह्मण ने भी उसे देखा। सोचने लगा—निश्चय ही हमें छुड़ाने के लिए भीमसेन आया है। तभी उसका मझला लड़का भी आ गया। घटोत्कच उसको लेकर चल पड़ा। उसे जल्दी थी। मां उसकी राह देख रही होगी। इसी समय ब्राह्मण ने भीमसेन के पास जाकर कहा, "हे मध्यम ! हमारी रक्षा करें।"

भीमसेन ने ब्राह्मण को प्रणाम किया और सबकुछ जानकर उसने घटोत्कच को ललकारा, "अरे, इस लड़के को छोड़ दे।"

घटोत्कच ने कहा, "नहीं छोड़ूंगा। मेरा पिता भी यदि आकर 'छोड़ दे' कहे तो भी नहीं छोड़ूंगा; क्योंकि यह मेरी माता की आज्ञा है।"

भीमसेन मन-ही-मन सोचने लगा—यह तो गुरुजनों का आदर करनेवाला मालूम होता है। मनुष्यों में सबसे पूज्य माता ही होती है। माता की आज्ञा से ही हम लोग इस दशा को पहुंचे हैं। उसने घटोत्कच से पूछा, "तुम्हारी माता कौन ? क्या नाम है उसका ?"

घटोत्कच ने कहा, "मेरी माता का नाम है हिडिम्बा।"

अब तो सबकुछ स्पष्ट हो गया। भीमसेन ने अपने पुत्र को पहचान लिया। वह बहुत प्रसन्न हुआ। ब्राह्मण से कहा, "अपने लड़के को वापस ले जाओ। मैं

उसके स्थान पर इस वीर के साथ जाऊंगा ।"

घटोत्कच इसके लिए भी तैयार हो गया। लेकिन भीमसेन उसके पीछे चलने के लिए तैयार नहीं था। उसने कहा, "अगर तुम्हारे शरीर में बल है तो मुझे ले चलो ।"

अब तो बातों-ही-बातों में बात बढ़ गई और वे दोनों लड़ने के लिए तैयार होगये । कुछ ही क्षण में उसके बल को देखकर घटोत्कच ने कहा, "यह तो मेरे पिता भीमसेन के समान लगता है ।"

भीमसेन ने पूछा, "अरे, तेरा पिता ब्रह्मा, शिव, विष्णु, इंद्र, कार्तिकेय और यम इनमें किसके समान है ?"

घटोत्कच ने कहा, "वह सब जैसा है ।"

भीमसेन तेजी से बोल उठा, "यह झूठ है ।"

यह सुनकर घटोत्कच को क्रोध आ गया । उसने कहा, "तुम मेरे पिता का अपमान करते हो ।"

और उसने चट्टान उखाड़कर भीमसेन पर फेंकी । अब तो धीरे-धीरे युद्ध बहुत तेज हो उठा । लेकिन भीमसेन हर बार उसके हमले को विफल कर देता था । अंत में घटोत्कच ने भीमसेन को मायापाश में बांध लिया। मां की कृपा से उसे सबकुछ सिद्ध था, लेकिन शिव की कृपा से भीमसेन ने भी उस पाश को तोड़ दिया । अब क्या हो सकता था ? घटोत्कच बलपूर्वक भीमसेन को

न ले जा सकेगा। तो क्या किया जाय। ले जाना तो होगा। बस उसने कहा, "तुमने चलने का वायदा किया था, चलो।"

भीमसेन तो स्वयं ही जाना चाहता था। तैयार हो गया और उसको लेकर घटोत्कच अपनी माता के पास पहुंचा।

सूचना पाकर मां ने बाहर झांका और भीम को देखकर बोली, "पागल, इस मनुष्य को लाये हो। अरे, ये तो हमारे देवता हैं।"

घटोत्कच ने चकित हो पूछा, "इसका क्या प्रमाण है, मां ?"

हिडिम्बा बोली, "प्रमाण !" और यह कहकर वह बाहर आई और बोली, "आर्यपुत्र की जय हो।" भीमसेन ने भी हिडिम्बा को देखा। बोला, "हिडिम्बा, यह सब क्या है।"

हिडिम्बा उसके कान में सबकुछ कहकर बोली, "यह है।" फिर घटोत्कच से कहा, "पगले, अपने पिता को हाथ जोड़।"

घटोत्कच बहुत ही प्रसन्न हुआ और प्रणाम करते हुए उसने गद्गद् होकर कहा, "हे पिता, पहले पता न होने के कारण मैंने आपको अभिवादन नहीं किया, मुझे

क्षमा कीजिये। अब मैं, धृतराष्ट्र-वन की आग, घटोत्कच आपको प्रणाम करता हूं।"

भीमसेन ने बेटे को गले से लगा लिया, "हे पुत्र तुम्हारे सब अपराध क्षमा हैं। तुम शक्तिशाली हो, वीर पुरुष हो। इन ब्राह्मण केशवदास को प्रणाम करो।"

घटोत्कच ने पिता के कहने पर ब्राह्मण केशवदास को नमस्कार किया। आशीर्वाद देकर वह अपने परिवार के साथ-साथ आगे चल पड़े।

भीमसेन ने उनसे कहा, "जाइये, लेकिन हमें भूलिये नहीं, फिर भी दर्शन दीजिये।"

और फिर मुड़कर पत्नी और पुत्र से बोले, "हिडिम्बा, इधर आओ! घटोत्कच, इधर आओ। पूज्य केशवदास को आश्रम के दरवाजे तक छोड़ आयें।"

और वे सब चल पड़े।

: २ :

दूत-वाक्य

जब महाराज युधिष्ठर जूए में अपना सबकुछ हार गये तो पांडवों को बारह वर्ष के लिए वनवास जाना पड़ा। इसके अतिरिक्त एक वर्ष तक उन्हें अज्ञातवास में भी रहना था। यह भी निश्चित हुआ कि यदि इस

एक वर्ष में उनका पता लग जायगा तो उनका राज्य उन्हें वापस नहीं मिलेगा और यदि पता नहीं लगता है तो उनका राज्य उन्हें वापस मिल जायगा।

पूरे तेरह वर्ष बीत गये, लेकिन दुर्योधन इस बात का पता न लगा सका कि इस तेरहवें वर्ष में पांडव कहां रहे। शर्त के अनुसार अब उन्हें अपना राज्य वापस मिल जाना था; लेकिन दुर्योधन ने ऐसा नहीं होने दिया। उसका परिणाम यह हुआ कि दोनों पक्ष युद्ध की तैयारी करने लगे। दुर्योधन ने सलाह करने के लिए अपने मित्र राजाओं को हस्तिनातुर बुलाया। ग्यारह अक्षौहिणी सेना लेकर वे सब उसकी सहायता करने के लिए आये।

पांडवों के मित्र भी कम न थे। पांचाल-नरेश द्रुपद और महाराज विराट जैसे शक्तिशाली राजा उनके पक्ष में थे। उन्होंने भी सात अक्षौहिणी सेना इकट्ठी की।

अब युद्ध होना निश्चित था। दुर्योधन सोचने लगा कि इतनी बड़ी सेना का सेनापति किसे बनाया जाय। पितामह भीष्म, आचार्य द्रोण, मामा शकुनि, मित्र कर्ण आदि महावीर तथा दूसरे योद्धा वहां उपस्थित थे। विचार करने के लिए उसने सबको राज्य-सभा में बुलाया और पूछा, "मेरे पास ग्यारह अक्षौहिणी सेना है,

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
BANGALORE-1.

इसका सेनापति कौन बन सकेगा।"

मामा शकुनि ने कहा, "पूज्य भीष्म के होते हुए इतनी बड़ी सेना का सेनापति और कौन हो सकता है?"

दुर्योधन बोला, "मामाजी, आप ठीक कहते हैं। पितामह ही सेनापति हों। हम भी ऐसा ही चाहते हैं।"

उसके बाद विधिपूर्वक शंखनाद के साथ-साथ पितामह भीष्म के सिर पर अभिषेक का जल डाला गया और उन्हें सेनापति के पद पर आसीन कर दिया गया।

इसी समय कंचुकी ने आकर सूचना दी कि पांडवों के शिविर से पुरुषोत्तम कृष्ण दूत बनकर आ रहे हैं।

यह सुनकर दुर्योधन आगबबूला हो उठा। उसने कहा, "अरे वादनारायण! कंस के नौकर उस ग्वाले को तुम पुरुषोत्तम कहते हो। जरासंध ने जिसको बार-बार पराजित किया वह पुरुषोत्तम हो सकता है? राजाओं के पास रहकर भी तुम्हें बोलना नहीं आया। तुम्हारा नाश हो।"

बेचारा कंचुकी घबराकर महाराज के पैरों पर गिर पड़ा और क्षमा मांगने लगा। बोला, "महाराज मुझसे गलती हुई। केशव दूत बनकर आया है।"

दुर्योधन ने कहा, "यह ठीक है। राजा लोगो, दूत बनकर केशव आया है। उसका आदर कैसे करना

चाहिए । अर्घ्य देकर पूजा करनी चाहिए । नहीं, नहीं, यह सब अनुचित है । उसे गिरफ्तार कर लेना चाहिए । सुनो राजाओ ! जो कोई भी कृष्ण के सम्मान में खड़ा होगा उसको बारह सुवर्ण भार दंड देना होगा । मैं भी उठना नहीं चाहता । क्या किया जाय ? अच्छा ! वाद-नारायण ! वह चित्र तो लाओ जिसमें द्रौपदी का चीर-हरण होते हुए दिखाया गया है । कृष्ण के आने पर मैं उसे ही देखता रहूंगा । उठूंगा नहीं ।"

कंचुकी ने ऐसा ही किया । उस चित्र में दुःशासन द्रौपदी का चीर खींच रहा था और वह आंखों में अच-रज भरे, राहू के मुख में पड़ी चंद्रलेखा के समान दिखाई दे रही थी । अपमानित भीम सभा के स्तंभ पर प्रहार करने के लिए उठ रहा था। लेकिन युधिष्ठिर के संकेत पर वह शांत होने की चेष्टा कर रहा था । क्रोध से नेत्र लाल थे, होठ जिसके फड़फड़ा रहे थे, वह अर्जुन सब राजाओं को नष्ट करने की इच्छा से गांडीव की डोरी खींच रहा था, लेकिन युधिष्ठिर के मना करने पर वह भी विवश था। नकुल और सहदेव तलवार और ढाल लिये ओठों को काटते हुए जिस प्रकार हिरण के दो बच्चे शेर की ओर झपटते हैं उसी प्रकार दुःशासन की ओर झपट रहे थे। युधिष्ठिर उनको भी मना कर

रहा था और वह गांधारराज शकुनि, जिसने छल से पासे फैंके थे, कनखियों से द्रौपदी की ओर देखता हुआ धरती कुरेद रहा था। आचार्य द्रौण और पितामह भीष्म ने कपड़े से अपने मुख छिपा लिये थे।

यह सब देखकर दुर्योधन बहुत प्रसन्न हुआ और उसने कंचुकी से कहा, "दूत को भेजो।"

और फिर कर्ण से बोला, "मित्र कर्ण, नारी के समान कोमल युधिष्ठिर का संदेश लेकर दूत आया है, उसे सुनने के लिए तैयार हो जाओ।"

तभी वासुदेव ने वहां प्रवेश किया। उन्होंने दुर्योधन के शिविर को देखा। राजाओं को देखा। और जैसे ही उन्होंने सभा में प्रवेश किया सारे राजा उठ खड़े हुए। उन्होंने कहा, "उठो मत। शांति से अपने-अपने स्थानों पर बैठे रहो।"

दुर्योधन बोला, "अरे, आप लोग उठ रहे हैं। आपको मेरा दंड याद नहीं।"

वासुदेव ने देखा, दुर्योधन बैठा ही है। उन्होंने कहा, "सुयोधन, बैठे हो?"

उनका इतना कहना था कि दुर्योधन अपने आसन से गिर पड़ा। मन-ही-मन सोचने लगा—मैंने न उठने का निश्चय किया था, लेकिन इसका प्रभाव तो देखो!

में आप-ही-आप गिर पड़ा। फिर वह बोला, "अरे दूत, यह आसन है, बैठ जाओ।"

वासुदेव ने उस चित्र को देखा। बड़े दुखी हुए। उन्होंने कहा, "अरे इस चित्र को उठा लो।"

दुर्योधन के कहने पर कंचुकी उस चित्र को उठाकर ले गया। उसके बाद दुर्योधन ने पूछा, "हे दूत, धर्मराज के पुत्र युधिष्ठिर, वायु के बेटे भीम, इंद्र के पुत्र अर्जुन और अश्विनीकुमार के वे जुड़वां बेटे नकुल सहदेव अपने सारे नौकरों के साथ कुशलपूर्वक हैं न ?"

वासुदेव बोले, "सब ठीक हैं। उन्होंने मुझे भेजा है और निवेदन किया है कि हमने प्रतिज्ञा पूरी करली है। अब धर्म के अनुसार विरासत में जो हमारा भाग है वह हमें दे दें।"

दुर्योधन ने उत्तर दिया, "कैसी विरासत। ये लोग चाचा पांडु के पुत्र नहीं हैं।"

वासुदेव ने कहा, "अरे दुर्योधन, इस तरह तो तुम्हारे पिता भी तो तुम्हारे दादा विचित्रवीर्य के पुत्र नहीं हैं, व्यास के पुत्र हैं। अब ऐसा न कहो। इस प्रकार तो आपस के विरोध से कुरु-कुल का नाश हो जायगा। क्रोध शांत करके वही करो जो युधिष्ठिर ने कहा है।"

लेकिन दुर्योधन क्या माननेवाला था। उसने कहा,

"हे दूत, तुम नीति को नहीं जानते। राज्य मांगा नहीं जाता। दिया भी नहीं जाता। वह तो शत्रुओं को जीतकर भोगा जाता है। यदि पांडव राज्य चाहते हैं तो उन्हें साहस करना चाहिए। नहीं तो किसी आश्रम में जाकर रहें।"

वासुदेव बोले, "सुयोधन, अपने भाइयों के लिए ऐसी बात मत कहो। इतने कड़वे न बनो।"

दुर्योधन ने उत्तर दिया, "अरे दूत! तूने अपने पिता के साले कंस के प्रति बड़ी दया दिखाई थी। तुमने उसको ठगा। फिर जब जामाता की मौत से दुखी होकर जरासंध ने तुमपर हमला किया तो भाग निकले।"

वासुदेव बोले, "कंस अपने दोषों के कारण मारा गया। उसने मेरी माता को दुख दिया। अपने पिता को जेल में डाला। उसे मरना ही था। और रही जरासंध की बात, तो यह राजनीति का खेल है। सब काम दशा, काल और अवस्था को देखकर किया जाता है। इन बातों को छोड़ो।"

लेकिन दुर्योधन ने कुछ नहीं सुना। अब कृष्ण क्रोधित हो उठे। उन्होंने कहा, "सुयोधन, तुम अर्जुन के पराक्रम को नहीं जानते। उसने शंकर को प्रसन्न कर लिया है। देवेंद्र ने उसको अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्र

दिये हैं। बिना किसी सहायता के उसने विराटनगर में तुम्हारे सारे सेनापतियों को पराजित कर दिया था। अरे जब चित्रसैन गंधर्व तुम्हें उठाकर ले गया था तब अर्जुन ने ही तुम्हारी सहायता की थी। मेरी बात मानकर यदि तुम उनका आधा राज्य नहीं दोगे तो वह तुम्हारी सारी धरती को जीत लेंगे।"

दुर्योधन ने कहा, "अरे दूत! भीम और अर्जुन कोई भी मुझपर आक्रमण करे, इंद्र भी आक्रमण करे मैं इस राज्य का एक तिनका भी नहीं दूंगा।"

इस प्रकार बात बढ़ती चली गई। दोनों एक दूसरे को अपशब्द कहने लगे। वासुदेव ने क्रोधित होकर कहा, "अरे दुष्ट, भाइयों से शत्रुता करनेवाले अंधे, तेरे कारण सारा कुरु-वंश नष्ट हो जायगा। अरे राजा लोगो, अब हम जाते हैं।"

दुर्योधन ने कहा, "कैसे जाते हो? मामा, दुःशासन, केशव को बांध लो। यह दूत के शिष्टाचार को लांघ गया है।"

लेकिन कोई भी आगे बढ़ने का साहस न कर सका। तब दुर्योधन स्वयं ही पाश लेकर उठा। लेकिन देखता क्या है कि चारों ओर वासुदेव-ही-वासुदेव दिखाई दे रहे हैं। कहींपर छोटे, कहींपर बड़े। वह घबरा

गया। सोचने लगा क्या करूं। बोल उठा, "अरे, अरे, राजा लोगों एक-एक केशव को बांध लो।" लेकिन यह क्या। राजा लोग तो अपने पाशों में आप ही बंधने लगे।

और इस प्रकार चकित होकर अपशब्द कहता हुआ दुर्योधन वहां से चला गया। कृष्ण भी बड़े क्रुद्ध हो रहे थे। उन्होंने सुदर्शन को पुकारा। वह तुरंत आ उपस्थित हुआ और आचमन करके उसने भगवान नारायण का जय-जयकार किया। पूछा, "भगवन् मेरे लिए क्या आज्ञा है ? क्या मेरु पर्वत को हिला दूं। समुद्र को आलोड़ित कर दूं। नक्षत्रों को पृथ्वी पर फेंक दूं। आपकी कृपा से मैं सबकुछ कर सकता हूं।"

उन्होंने कहा, "सुदर्शन इधर आओ। सुयोधन, तुम कहीं भी जाओ; लेकिन यह चक्र आज तुम्हारा कालचक्र ही बनेगा।"

सुदर्शन एक बार तो दुर्योधन की ओर झपटा, लेकिन फिर उसने शांत होकर कहा, "भगवन्, संसार का भार उतारने के लिए आप मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर आये हैं। यदि आज आपने सुयोधन को मार डाला तो आपका सारा परिश्रम व्यर्थ हो जायगा।"

उसकी यह बात सुनकर वासुदेव सबकुछ समझ गये। बोले, "मुझे क्रोध आ गया था, उसी क्रोध में मैं

यह सब कर बैठा। अच्छा, अब तुम अपने घर जाओ।"

सुदर्शन लौट चला। लेकिन क्या देखता है कि उसके साथ-साथ ही भगवान का धनुष शांर्ग, उनकी गदा कौमोदकी, शंख पांचजन्य, खड्ग नंदक और वाहन गरुड़ ये सब बारी-बारी चले आ रहे हैं। उन सबको उसी प्रकार संबोधित करते हुए उसने कहा, "अरे शांर्ग भगवान नारायण का क्रोध शांत हो गया है, तुम अपने स्थान को वापस लौट जाओ।"

उसके जाने के बाद वह कौमोदकी की ओर मुड़ा। वह मणियों और सोने से चित्रित थी। देवताओं के शत्रुओं, दैत्यों के सिरों को नाश करने में निपुण, पर्वतों की ढलान की तरह रूपवाली उसे देखकर उसने कहा, "अरे कौमोदकी, भगवान नारायण का क्रोध शांत हो गया है। अब तुम अपने स्थान को लौट जाओ।" वह लौट गई तो वह पांचजन्य की ओर मुड़ा। वह भगवान के मुखकमल के समान प्रसन्न दिखाई दे रहा था। उसका शब्द प्रलयकाल के समुद्र की तरह भयंकर था। उससे भी सुदर्शन ने यही कहा, "भगवान नारायण का क्रोध शांत हो गया है। अब तुम अपने स्थान को लौट जाओ।"

वह लौटा भी नहीं था कि नंदक आ पहुंचा। वह

नंदक रूप में नारी की तरह, युद्ध में महासुर की तरह और दौड़ने में भयंकर उल्का की तरह था। उसे भी समझा-बुझाकर सुदर्शन ने लौटा दिया।

जब वे सब चले गये तो सुदर्शन भी अपने स्थान की ओर चल पड़ा। लेकिन तभी क्या देखा—आंधी बहने लगी। सूर्य तपने लगा। पर्वत हिल उठे। पेड़ उखड़-उखड़कर चारों ओर गिरने लगे। मेघ रास्ता भूलकर भटक गये। सर्पराज वासुकी आदि सब घबरा उठे। सुदर्शन सोचने लगा—यह क्या हुआ! तभी उसने देखा—अरे इंद्र से अमृत छीननेवाले ये तो गरुड़ आ रहे हैं। उसने पुकारकर कहा, "अरे कश्यप के प्यारे बेटे, भगवान का क्रोध अब शांत हो चुका है। चलिये, चलिये, हम सब लौट चलें।"

और इस प्रकार वे सब अपने-अपने स्थान को लौट गये। तब वासुदेव ने भी पांडवों के शिविर की ओर प्रस्थान किया। लेकिन उसी समय किसीने पुकारा। "मत जाओ। मत जाओ।"

वासुदेव मुड़े। देखा—बूढ़े और अंधे राजा धृतराष्ट्र चले आ रहे हैं। वह खड़े हो गये। बोले "राजन्! मैं यहां खड़ा हूं। कहो क्या कहते हो।"

धृतराष्ट्र ने कहा, "भगवन् नारायण, पांडवों के

शुभचिंतक ब्राह्मणों के प्यारे देवकीनंदन, आप कहां हैं? देवेश, मेरे पुत्र ने बहुत बड़ा अपराध किया है। मैं आपके चरणों में गिरता हूं।" यह कहते-कहते उन्होंने वासुदेव के चरण पकड़ लिये। वासुदेव ने तुरंत उनको उठाकर अपनी छाती से लगा लिया। धृतराष्ट्र ने विधि-वत् उनकी पूजा की। उन्हें अर्घ्य दिया। कहा, "इसे स्वीकार कीजिये।"

वासुदेव ने उसे स्वीकार करते हुए कहा, "बोलो, मैं तुम्हारा क्या उपकार कर सकता हूं?"

धृतराष्ट्र ने कहा, "आप मुझपर प्रसन्न हैं, इससे अधिक अच्छा और क्या हो सकता है।"

वासुदेव बोले, "फिर भी कभी दर्शन दें।"

धृतराष्ट्र ने उनकी आज्ञा स्वीकार की और उन्हें प्रणाम करके वह लौट गये।

तब वासुदेव भी अपना कार्य पूरा करके पांडवों के शिविर की ओर चले गये।

: ३ :

उरु-भंग

महाभारत का युद्ध लगभग समाप्त हो चुका था, लेकिन कौरवों की ओर महाराज दुर्योधन अभी शेष थे।

सारी युद्ध-भूमि मरे हुए महावीरों के शरीरों से पटी पड़ी थी। चारों ओर हाथी-घोड़े मरे पड़े थे। गिद्धों के लिए उत्सव-ही-उत्सव था। हाथियों का ढेर ऐसा लगता था जैसे किसीने युद्धरूपी यज्ञ के लिए लकड़ियों का ढेर लगाया हो। रथों की झंडियां देवताओं के वायुयानों के समान दिखाई दे रही थीं। जीते हुए योद्धाओं का गर्जन मंत्र-पाठ के समान था। धरती पर पड़े हुए वीर बलि के पशु थे। कहीं-कहीं तो बहुत ही बीभत्स दृश्य दिखाई देते थे। ध्वजा के ऊपर से गिरी हुई मालाओं को पहने, रत्नजड़ित वाणों से बिधे योद्धाओं के शवों को गीदड़ियां रथ के नीचे से इस प्रकार निकाल रही थीं जैसे रोमांचित होकर नारियां सजे हुए लेकिन व्याकुल जामाता को रथ से उतारती हैं।

नाना प्रकार के अस्त्र-शस्त्र भी वहां फैले पड़े थे। खून की नदियां बह रही थी। सारथियों के मर जाने के कारण घोड़े रथों को इधर-उधर खींच रहे थे। महावतों के बिना हाथी इधर-उधर दौड़ रहे थे। सूरज की किरणों के कारण धरती पर पड़े वाण, भाले, तीर, तोमर और तलवार ऐसे चमक रहे थे मानो आकाश से तारे गिर पड़े हों।

तभी सहसा बादल गरज उठे। इतनी तेज आवाज

हुई मानो भूकंप से जमीन फट रही है। मालूम हुआ कि द्रौपदी की वेणी खींचने से दुखी हुए पांडवों में मध्यम भीमसेन और अपने निन्यानवे भाइयों की हत्या से क्रुद्ध महाराज दुर्योधन गदा-युद्ध कर रहे हैं। भगवान व्यास, कृष्ण और उनके बड़े भाई बलराम पांडवों तथा अन्य वीरोंसहित बड़ी उत्सुकता से उस युद्ध को देख रहे हैं। वह युद्ध बहुत ही रोमांचकारी है। तपे हुए सोने की शिला की तरह फैली हुई भीमसेन की छाती चूर हो चुकी है। ऐरावत की सूंड के समान दुर्योधन के कंधे टूट गये हैं। लेकिन क्रोध में भरे हुए, हाथों को ऊपर उठाए हुए, पैंतरा बदलने के लिए शरीर को मोड़ते हुए, दोनों महावीर एक दूसरे पर प्रहार कर रहे हैं। भीम के शरीर से बहुत रक्त बह चुका है। फिर भी वह सिंहनाद करता हुआ उछल रहा है, लेकिन महाराज दुर्योधन बार-बार उसके प्रयास को विफल कर देते हैं। वह इस विद्या में बहुत निपुण हैं, लेकिन भीमसेन उनकी अपेक्षा अधिक बलवान है।

सहसा देखते-देखते पर्वत के समान विशाल भीमसेन पृथ्वी पर गिरने को हुआ। युधिष्ठिर निराश हो उठे। विदुर की आंखों में आंसू भर आये। क्रोध से विवश होकर अर्जुन ने गांडीव उठा लिया। श्रीकृष्ण आकाश

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
BANGALORE-1. 015,2x BHA 152433

की ओर देखने लगे। लेकिन अपने शिष्य दुर्योधन की निपुणता को देखकर बलरामजी बहुत प्रसन्न हुए। दुर्योधन भी भीम का उपहास करने लगा, "हे भीम! वीर पुरुष दीनों को नहीं मारा करते, इसलिए तू डर मत।" यह देखकर कृष्ण ने संकेत से भीमसेन को बताया कि उसे दुर्योधन की जांघ पर चोट करनी चाहिए।

भीमसेन समझ गये। उन्होंने अपने हाथ से भौंहों का पसीना पोंछा और चित्रांगदा नामक अपनी गदा को पकड़कर सिंहनाद करने लगे। युद्ध फिर शुरू हो गया। कुछ ही देर में युद्ध के नियमों का उल्लंघन करते हुए भीम ने दुर्योधन की जंघाओं पर प्रहार किया। कुरुराज धरती पर गिर पड़े। सब लोग धिक्कार कर उठे। भगवान् व्यास यह देखते ही आकाश की ओर उड़ गये। बलरामजी ने आंख मूंद लीं। उनके क्रोध को देखकर पांडव भयभीत हो उठे। तभी श्रीकृष्ण अपने हाथों से सहारा देते हुए भीम को वहां से बाहर ले गये। तब क्रोध के कारण लाल आंखोंवाले बलरामजी ने चिल्लाकर कहा, "अरे राजाओ, मेरे हल और मेरे अहंकार की परवाह न करके भीमसेन ने दुर्योधन की जंघाओं पर प्रहार किया है। अरे दुर्योधन, जरा धीरज

धर। मैं सौम के दरवाजे को तोड़नेवाला, शाल्वपुरी के किले को फोड़नेवाला, यमुना की धारा को मोड़नेवाला, अभी भीम को नष्ट करता हूं।"

तब अपने घायल शरीर को हाथों से घसीटते हुए दुर्योधन ने कहा, "भगवान् बलराम प्रसन्न हों। मैं अपनी जंघाओं को घसीटता हुआ अपना सिर आपके चरणों पर रखता हूं। आप क्रोध न करें। नहीं तो हमारे कुल में कोई पितरों को जल देनेवाला भी नहीं बचेगा। अब हमारी शत्रुता, हमारा युद्ध और स्वयं हम सब नष्ट हो चुके हैं।"

लेकिन बलराम का क्रोध शांत नहीं हुआ। उन्होंने कहा, "मैं पांडवों को नष्ट कर डालूंगा। उनके सब साथियों समेत मैं उन्हें स्वर्ग का यात्री बना दूंगा। तुम्हें धोखा दिया गया है।"

दुर्योधन ने निवेदन किया, "हे बलराम ! क्या सचमुच आप ऐसा समझते हैं कि मुझे धोखा दिया गया है ? नहीं, भीम ने मुझे छल से नहीं जीता है। वह तो उस जगतप्रिय कृष्ण ने मुझे मौत को सौंप दिया है। भीम की गदा में उन्होंने स्वयं प्रवेश किया था।"

जब इस प्रकार बातें चल रही थीं तभी धृतराष्ट्र, गांधारी और महारानियों सहित दुर्योधन के पुत्र दुर्जय

के आने का समाचार मिला। रोते-बिलखते वे सब वहां पहुंचे। उस करुण दृश्य का वर्णन कौन कर सकता है ? स्वयं बलराम भी विचलित हो उठे। महारानियां हाहाकार करने लगीं। सौ पुत्रों को जन्म देकर भी धृतराष्ट्र और गांधारी अब निसंतान थे। कौन उन्हें जलांजली देगा ? जिस समय बाबा के कहने पर दुर्जय ने कहा, "पिता, तुम मुझे अपनी गोद में बिठाओ," उस समय दुर्योधन विकल हो उठा। एक क्षण के लिए भी अपनी टूटी जंघा पर बेटे को बैठाना उसके लिए असह्य हो गया। धृतराष्ट्र दुखी होकर धरती पर गिर पड़े। दुर्योधन के बहुत समझाने पर उन्होंने कहा, "मैं बूढ़ा हूं। जन्म से अंधा हूं। अब यह असह्य पुत्र-शोक मुझे नष्ट कर रहा है।"

फिर भी दुर्योधन ने उन्हें सांत्वना दी। अपनी मां को समझाया। कहा, "यदि मैंने कोई भी पुण्य किया हो तो अगले जन्म में आप ही मेरी मां हों।" फिर उसने अपनी पत्नियों को धीरज बंधाया। वह बोला, "क्या मैं शोक करने योग्य हूं। मैं पीठ दिखाकर नहीं मारा गया, फिर तुम रो क्यों रही हो ? मैंने मित्रों की सहायता की, शत्रुओं को परेशान किया। मेरे गौरव को देखते हुए तुमको रोना नहीं चाहिए।"

उन्होंने अपने बेटे से कहा, "मेरी तरह पांडवों की सेवा करना। पूज्या कुंती की आज्ञा मानना। अभिमन्यु की माता को अपनी माता की तरह समझना। हे पुत्र ! तेरा स्वाभिमानी पिता लड़ते हुए युद्ध-भूमि में मारा गया है। यह सोचकर तू शोक मत कर। मेरे मरने के बाद तू युधिष्ठिर के रेशमी दुपट्टे से ढकी हुई विशाल भुजा को छूकर पांडवों के साथ मुझे जलांजलि देना।"

यह सुनकर बलराम और भी विचलित हो उठे। सोचने लगे, "अरे, कैसे यह वैर पश्चात्ताप में बदल चुका है ?"

तभी सहसा एक बार फिर वह युद्धभूमि किसीके धनुष की टंकार से विचलित हो उठी। बलराम ने अचरज से देखा—गुरुपुत्र अश्वत्थामा क्रोध में भरे हुए उनकी तरफ आ रहे हैं। उनकी आंखें कमल की पंखुरियों के समान खुली और चौड़ी हैं। उनकी भुजाएं चमकते सोने के स्तंभ के समान सुदृढ़ और विशाल हैं। कठोर वाण पर जोर से चिल्ला चढ़ाये हुए वह उस चमकते हुए मेरू के समान मालूम होते हैं जिसके शिखर पर इंद्र-धनुष विराजमान है।

वहां प्रवेश करते ही अश्वत्थामा क्रुद्ध स्वर में

चिल्ला उठा, "हे युद्ध की लालसा करनेवाले राजाश्रा, मेरी बात सुनो। यह दुर्योधन ही था, कपट से जिसकी जंघाएं तोड़ दी गई हैं। यह सुतपुत्र कर्ण ही था, जिसके श्रस्त्र-शस्त्र विफल हो गये थे। मैं नहीं था। मैं तो द्रौण का बेटा श्रश्वत्थामा शस्त्रों से सजा हुश्रा, किसी बलवान योद्धा को देखता हुश्रा, श्रकेला इस युद्धभूमि में खड़ा हुश्रा हूं। श्रहा! ग्यारह् श्रक्षौहिणी सेना के राजा लोग जिसे श्रपने हाथों पर उठाये रखते थे, महात्मा भीष्म श्रौर महा पराक्रमी मेरे पिता युद्ध-भूमि में जिसके सह-योगी थे, उसी महारथी दुर्योधन को समय के फेर के कारण नीचा देखना पड़ा। श्ररे, वह सामने ही तो पड़े हैं। धावों के रुधिर से लथपथ ऐसे लग रहे हैं जैसे संध्या का सूर्य।"

उन्होंने पास जाकर महाराज को प्रणाम किया। कहा, "यह क्या हुश्रा, महाराज ?"

दुर्योधन ने कहा, "गुरुपुत्र! यह सब मेरे श्रसंतोष का फल है।"

श्रश्वत्थामा बोले, "नहीं, मैं तुम्हें श्रब भी उच्च पद पर बिठाऊंगा। यदि स्वयं कृष्ण गरुड़ की पीठ पर सवार होकर, धनुष श्रौर चक्र उठाये हुए, युद्धभूमि में प्रवेश करें तो भी मैं श्रपने शस्त्र से सबको समाप्त कर

दूंगा ।'

दुर्योधन ने कहा, "ऐसा न करना, गुरुपुत्र । कर्ण चले गये । पितामह भी चल बसे। मेरे सौ भाई युद्ध-भूमि में मारे गये । मैं भी जा रहा हूं । तुम अपना धनुष छोड़ दो । क्या तुम नहीं जानते कि द्रौपदी के घुंघराले बालों को मैंने अपने हाथों से पकड़कर घसीटा है ? मैंने सुकुमार अभिमन्यु को युद्ध-भूमि में मारा है। चौपड़ के खेल में धोखे से हारे हुए पांडवों को जंगली जानवरों की तरह जंगल में भटकाया है । इतना कुछ होने पर पांडवों ने जो मेरा मानभंग किया वह तो बहुत थोड़ा है ।"

लेकिन अश्वत्थामा नहीं माने । उन्होंने प्रतिज्ञा की, "आपकी, अपनी और वीर पुरुषों की शपथ खाकर कहता हूं कि मै रात्रि-युद्ध में पांडवों को समाप्त कर दूंगा और दुर्जय को राजसिंहासन पर बिठाऊंगा ।"

दुर्जय से उन्होंने कहा, "तुम्हें पिता से राज्य नहीं मिला । बाहुबल से भी तुमने उसे प्राप्त नहीं किया । तब भी मैं कहता हूं कि ब्राह्मण के कथनमात्र से तुम राजा बनोगे ।"

बलराम ने भी उसका समर्थन किया ।

दुर्योधन के प्राण खिंच रहे थे । मरते-मरते उसने

MAHATMA GANDHI MEMORIAL LIBRARY

5, Kumara Park (East), Bangalore-1

DATE LABLE

CL. No. 015,2x BHA 152W3N58'1 Accn. No. H:00068P

This book ought to be returned on or before the date last marked below, or fines will be incurred.

Due Date	Ticket No.	Inls.	Due Date	Ticket No.	Inls.

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
DATE........................
ACC. No............................
CALL No..........................
BA...

Mahatma Gandhi Memorial Library
5, Kumara Park (East), Bangalore-1
BOOK CARD
152W3N58;1
CL No. O15,2xBHA Acc. No. H.000688
Author. BHASA ( ) ( ),
Title Teen natak.

Ticket No.	Issue Date	Return Date	Ticket No.	Issue Date	Return Date

O15,2xBHA
152W3N58;1
H.000688

संस्कृत-साहित्य-सौरभ-माला की पुस्तकें

१. कादंबरी
२. उत्तर-रामचरित
३. वेणी-संहार
४. शकुंतला
५. मृच्छकटिक
६. मुद्राराक्षस
७. नलोदय
८. रघुवंश
९. नागानंद
१०. मालविकाग्निमित्र
११. स्वप्नवासवदत्ता
१२. हर्षचरित
१३. किरातार्जुनीय
१४. दशकुमार-चरित : भाग १
१५. दशकुमार-चरित : भाग २
१६. मेघदूत
१७. बिक्रमोर्वशी
१८. मालती-माधव
१९. शिशुपाल-वध
२०. बुद्ध-चरित
२१. कुमार-संभव
२२. महावीर-चरित
२३. रत्नावली
२४ पंचरात्र
२५. प्रियदर्शिका
२६. वासवदत्ता
२७. रावण-वध
२८. सौंदरनंद
२९. कुंदमाला
३६. यशस्तिलक
३१. तिलकमंजरी
३२. प्रतिमानाटक
३३. तीन नाटक

३३

सैंतीस नये पैसे